अध्याय तिसरा

हिन्दी के समस्याप्रधान उपन्यासों का उद्भव एवं विकास

अध्याय - तिसरा

" हिन्दी के समस्या प्रधान उपन्यासों का उद्भव एवं विकास " --

समस्त मानव- जीवन को ` समस्या ` नामक चार अक्षरों ने बाँध लिया है। भले ही मनुष्य जन्म से स्वतंत्र हो, पर मृत्यु से वह निश्चित ही बंधा हुआ है। जन्म से लेकर मृत्युतक के इस जीवन-रुपी यात्रा में समस्या-रुपी बाधाओंसे मुकाबला करते वह अन्तीम गति को प्राप्त करता है। प्रत्येक व्यक्ति सुख की अभिलाषा रखते हुए - कर्मरत होता है। मात्र इस मार्ग में उसे अनेक समस्याओं से ही गुजरना पड़ता है। ` समस्या ` का अर्थ है - " कठिन प्रश्न या विकट स्थिति अथवा प्रसंग; उलझन "[१] और मनुष्य अपने पूरे जीवन में इन उलझनों को सुलझाने में रत रहता है। आज विकास के बावजूद भी जटिलताएँ, कठिनाइयाँ निरंतर बढती ही जा रही है क्योंकि मनुष्य इच्छाओं का दास है।

राजनीतिक स्वतंत्रता के बाद भी व्यक्ति तथा समाज अनेकानेक समस्याओंसे बुरी - तरह से ग्रस्त है। इन व्यक्तियों तथा समाज की समस्याओं की अभिव्यक्ति का उत्कृष्टतम् माध्यम उपन्यास विधा है। क्योंकि उपन्यास मानव जीवन के सबसे अधिक निकट है। इसीलिए तो प्रेमचंद ने उपन्यास को ` मानव जीवन का चित्र-मात्र समझा। ` उपन्यास में ही साहित्य की अन्य विधाओंकी अपेक्षा जीवन के यथार्थ चित्रण की अधिक संभावना होती है। " मानव क्योंकि गलतियों का पुतला है और गलतियों से समस्याएँ पनपती रहती हैं, जन्म लेती हैं और विकास पाती है। अत: उसका बोलता रुप, ` उपन्यास " इससे अपने को दूर कैसे रख सकता है। "[२] इसीलिए हिन्दी का उपन्यास

---

१ संपादक - भोलानाथ तिवारी - महेन्द्र चतुर्वेदी, ओ.पी.गाबा‌ -
- व्यावहारिक हिन्दी कोश -

२ डॉ. विमल भास्कर - हिन्दी में समस्या साहि...

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY. KOLHAPUR.

साहित्य भी मानव जीवन की अनेक समस्याओंका यथार्थता की धरातलपर व्यापक चित्रण करता हुआ आगे बढ रहा है। हिन्दी के समस्यामूलक उपन्यासों में मुंशी प्रेमचंद का स्थान सबसे ऊँचा है। अत: यह अनिवार्य हो जाता है कि उन्हीं को केन्द्र बनाकर हिन्दी के समस्या प्रधान उपन्यासों के उद्भव एवं विकास पर एक दृष्टिक्षेप डालें।

१ प्रेमचंद पूर्व युग के -- समस्या प्रधान उपन्यास
२ प्रेमचंद युग के -- समस्या प्रधान उपन्यास
३ प्रेमचंदोत्तर युग के - समस्या प्रधान उपन्यास !

प्रेमचंद-पूर्व युग --

प्राचीन काल से ही भारत वर्ष में धर्म नीति उपदेश - मूलक,प्रेम-प्रधान तथा आश्चर्यजनक कथा आख्यायिकाओंकी एक लम्बी परम्परा रह चुकी है। जिनका उद्देश्य मनोरंजन या उपदेश देना था। परंतु जब हिन्दी साहित्याकाश में भारतेन्दु हरिश्चंद्र का अविर्भाव हुआ, तो उनके आगमन के साथ ही उपन्यास विधा का विकास आरंभ हुआ। साथ ही हिन्दी के समस्या-मूलक उपन्यासोंका बीजवपन भी भारतेन्दु युग में हुआ। भारतेन्दु से प्रोत्साहन पाकर बंगला उपन्यासों के अनुवाद के साथ मौलिक उपन्यासों की सृजन की परम्परा भी चल निकली। ` पूर्णप्रकाश और चन्द्रप्रभा ` नामक उपन्यास का अनुवाद स्वयं भारतेन्दु ने किया था। इसके साथ ही ` परीक्षा गुरु `, ` चंद्रकान्ता `, ` श्यामा स्वप्न ` जैसे मौलिक उपन्यासोंका सृजन भी किया गया। इस युग में उपदेशमूलक, प्रेम-प्रधान तथा शिक्षा-प्रदान उपन्यासों के साथ अधिकतर तिलस्मी,ऐय्यारी तथा जासूसी उपन्यास ही लिखे गये। जिनका उद्देश्य मात्र कौतुहल और चमत्कार प्रदर्शन द्वारा पाठकों का मनोरंजन करना था। इनमें देवकीनंदन खत्री, गोपाल गहमरी तथा राधाकृष्णदास आदि के नाम विशेष उल्लेखनिय है। परंतु हमें इन उपन्यासों को नहीं लेना है, बल्कि हमें उन

उपन्यासों को लेना है, जिनमें समाज का व्यापक चित्रण हुआ है और जिन समस्याओं से वे बुरीतरह से पीड़ित हों ।

" भारतेन्दु के समकालीन उपन्यासकार जहाँ एक ओर प्राचीन कथा - साहित्य की कल्पनात्मकता, ऐतिहासिकता तथा चमत्कारपूर्ण घटनाओं को आत्मसात कर परम्परावादी बन गया था वहाँ दूसरी ओर उससे भिन्न जीव और जगत् की यथार्थता को ग्रहण कर कुछ ऐसे विषय अपना रहा था, जो प्रयोग - मूलक उपन्यासों के आधार बने और कालान्तर में जिन की परम्पराएँ भी स्थापित हुईं । " [१] इस प्रकार उपन्यासों में समसामयिक जीवन और समाज की समस्याओं के चित्र उभर आने लगे । बालकृष्ण भट्ट का " नूतन ब्रह्मचारी ", रत्नचंद प्लीडर का " नूतन चरित ", राधाकृष्णदास का " निःसहाय हिन्दू " राधाचरण गोस्वामी का " विधवा-विपत्ति " किशोरीलाल गोस्वामी का " लवंग-लता ", " कुसुम-कुमारी ", बालमुकुंद गुप्त का " कामिनी " आदि सामाजिक उपन्यास इस युग की विशेष उल्लेखनिय उपन्यास हैं । जिनमें सामाजिक समस्याएँ - विधवा, नारी की स्वतंत्रता, शिक्षा, समाज सुधार, भारतीय आदर्श, पश्चिमी सभ्यता आदि पर जमकर कलम चलाई है ।

किशोरीलाल गोस्वामी के उपन्यासों में हमें तत्कालीन समाज में प्रचलित कुप्रथाओं और बुराईयों का चित्रण मिलता है । वेश्याओं के कपटपूर्ण पापाचार, विधवाओं के व्यभिचार तथा भ्रूण-हत्या, देवदासी का कुत्सित जीवन, सपत्नी - कलह आदि का चित्रण उनके " चंद्रावली ", " मदन मोहिनी " " सौतिया-डाह " आदि उपन्यासों में मिलता है । श्रध्दाराम फुल्लौरी के " भाग्यवती " में बाल-विवाह का विरोध, " स्वर्गीय कुसुम " में देवदासी प्रथा का विरोध, किशोरीलाल गुप्त के " राधा " में स्त्री-शिक्षा का समर्थन आदि प्रवृत्तियों का चित्रण मिलता

---

१ डॉ. सुभद्रा - हिन्दी उपन्यास - परम्परा और प्रयोग - पृ.सं.८५

है। जिनका आगे चलकर हिन्दी उपन्यास साहित्य में विकास हुआ। इसी युग के अंत में आयोध्यासिंह उपाध्याय के 'ठेठ हिन्दी का ठाठ' नामक उपन्यास में अनमेल विवाह के दुष्परिणामों को देखा जा सकता है, तो ब्रजनंदन सहाय के 'सौंदर्योपासक' में स्वच्छन्द प्रेम तथा अनमेल विवाह के दुष्परिणामों की ओर संकेत किया है। इस समय के सामाजिक उपन्यासों में कौटुंबिक एवं सामाजिक समस्याएँ ही प्रधान रूपसे चित्रित हुई है। इनका उद्देश्य उपदेश देकर समाज-सुधारनेका ही रहा है। और इन सामाजिक उपन्यासों में भी प्रेम-संबंधी घटनाओं को लेकर लिखे गये उपन्यासों की संख्या अधिक है। उनमें समाज के वास्तविक स्वरुप एवं उसकी गंभीर समस्याओं के यथार्थ चित्रण का अभाव ही रहा है।

हिन्दी के प्रारंभीक उपन्यास साहित्य में भारतेन्दु के पूर्व कोई भी उपन्यास उपन्यासों की विशेषताएँ लिये हुये नहीं मिलता। अत: उपन्यास कला की दृष्टिसे इन उपन्यासोंका अधिक महत्त्व नहीं। और भारतेन्दु युगीन (प्रेमचंदपूर्व युग) उपन्यास भी इस दृष्टिसे पूर्ण खरे नहीं उतरते। मात्र हिन्दी के समस्या-प्रधान उपन्यासों के विकास क्रम की वह पहली कड़ी जरूर है। "उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त में और बीसवीं शताब्दी के आरंभ में हिन्दी में सबसे अधिक प्रभावशाली कथा साहित्य ऐय्यारी और तिलस्मी उपन्यासोंका था।"[१] अत: प्रेमचंद के उपन्यासों में ही हमें उपन्यास के यौवन का उन्मेष दिखाई देता है और सामाजिक परिवेश की सफल तथा यथार्थ अभिव्यक्ति भी।

प्रेमचंद - युग --

हिन्दी उपन्यास जगत् में प्रेमचंद का आगमन एक युगान्तकारी घटना है। उनके आगमन से हिन्दी उपन्यास साहित्य की रिक्तता की सच्चे अर्थों में पूर्ती हुई। तिलस्मी, ऐय्यारी, जासूसी उपन्यासों को परम्परा में परिवर्तन आया और उपन्यासों

---

१ डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी - हिन्दी साहित्य : उद्भव और विकास - - पृ.सं.२४०

का आधार समग्र भारतीय जन जीवन का चित्रण तथा समाज सुधार रहा । प्रेमचंद के उपन्यासों में प्रथम बार जन सामान्यों को वाणी मिली और तिलस्मी ऐय्यारी जासूसी परम्परा के उपन्यासों की जगह जीवन मर्मों को उद्घाटित करनेवाले उपन्यासों का सृजन आरंभ हुआ । प्रेमचंद के उपन्यासों में विशाल भारतीय जन जीवन, विशेषकर भारतीय किसान और मध्यमवर्गीय जीवन की अनेकोंमुखी समस्याओं का चित्रण हुआ है । साथ ही नारी समस्या का भी विशद चित्रण देखने मिलता है । "उनके उपन्यास भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के सटीक भाष्य हैं । और तत्कालीन उत्तरी भारत के सवाक्-चित्र, उसमें राजा से लेकर रंक तक सब आते हैं । यह देखकर ऐसा लगता है कि जैसे हम स्वयं उनके औपन्यासिक जगत् में ही विचरण कर रहे हों ।" १

प्रेमचंद का 'सेवासदन' (१९१८) हिन्दी उपन्यास जगत् में एक नवीन दिशा का सूचक बनकर आया । उपन्यास जीवन की समग्रता के चित्रण के साथ ही आदर्श रूपों की प्रतिष्ठा का श्रेष्ठतम् साधन बना । विषय निर्वाचन जीवन दर्शन तथा चित्रण कला आदि क्षेत्र में नवीनता आई । रोमांस - कल्पना एवं चमत्कार प्रदर्शन के कटघरे से निकलकर, हिन्दी उपन्यास सामाजिक यथार्थ की कठोर भूमिपर खडा होकर, वास्तविक रूपमें अपने युग का प्रतिनिधित्व करने लगा । प्रेमचंद ऐसे उपन्यासकार थे - जिन्हें समकालिनता का तथा समवर्ती जीवन की आंतरिक शक्तियोंका बोध था । इस दृष्टिसे वे अपने पूर्ववर्ती साहित्य से बहुत ही आगे निकल चुके थे । तत्कालीन उपन्यासकारों ने जन-जागरणवादी आन्दोलन के विभिन्न पहलों को अपने उपन्यासों का विषय बनाया । प्रेमचंद युगीन उपन्यासों में संयुक्त कुटुम्ब प्रथा की विषमताएँ, नारी जीवन की अनेकानेक समस्याएँ, धर्म एवं जातिगत् भेदभाव, सामाजिक कुप्रथाएँ तथा अंधविश्वासों, धार्मिक नैतिक बाह्याडम्बर, किसान-मजदूर की दयनीय सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति,

---

१ डॉ. शिवकुमार शर्मा - हिन्दी साहित्य : युग और प्रवृत्तियाँ - -- पृ.सं.६११

जमींदार और पूंजीपतियों की निरंकुशता, सरकारी कर्मचारियों के अन्याय अत्याचार, पुलिस की शोषण प्रवृत्ति आर्थिक कष्टों से संत्रस्त अपार-जन-समूह तथा विभिन्न राष्ट्रीय आन्दोलन आदि में से एक या अनेक समस्याओं को अपने उपन्यासों का विषय बनाया। " "प्रेमचंद ने भारतीय साहित्य के लिए भी वही किया जो `गोर्की` ने। अगर महात्मा गाँधी ने राजनीतिक क्रांति कर भारतीय जनता को शासन के खिलाफ बगावत करने की सीख दी, तो दूसरी ओर प्रेमचंद ने साहित्यिक क्षेत्र में क्रांतिकर भारतीय आत्मा को जगा कर मानवता की उस मंजिल पहुँचाया, जहाँ गाँधी उसे नहीं पहुँचा सके। जिसप्रकार `गोर्की` `मदर` को लिखकर महान हो गये, उसीप्रकार प्रेमचंद ने भी `गोदान` की रचनाकर अमरख्याति अर्जित की है। गोर्की के `मदर` में सिर्फ रूस के मजदूरों का वास्तविक चित्रण है, जिसे हम एकांगी ही कहेंगे। लेकिन प्रेमचंद उस हैसियत से `गोर्की` से बढकर है।" [१] डॉ. हजारी प्रसाद व्दिवेदी भी प्रेमचंद के महत्व को स्वीकार करते हैं। उन्हीं के शब्दों में -- "प्रेमचंद शताब्दियों से पददलित अपमानित, और उपेक्षित कृषकों की आवाज थे। पर्दे में कैद, पद्-पद् से लांछित, और असहाय नारी जाति की महिमा के जबरदस्त वकील थे। गरीबों और बेबसों के महत्व के प्रचारक थे। अगर आप उत्तर भारत की समस्त जनता के आचार-विचार, भाषा-भाव, रहन-सहन, आशा-आकांक्षा, दुःख-सुख और सूझ - बूझ जानना चाहते हैं तो प्रेमचंद से उत्तम परिचायक आपको नहीं मिल सकता। झोपड़ियों से लेकर महलों, खोमचेवाले से लेकर बैन्कों, गांव से लेकर धारा सभाओं तक आपको इतने कौशल-पूर्वक और प्रामाणिक भाव से कोई नहीं ले जा सकता।" [२]

`प्रेमचंद हिन्दी के प्रथम समस्या उपन्यासकार हैं। इनका विषय भारत की वह भूमि है, जिसमें उसकी आत्मा निवास करती है - गांव और किसान इनके उपन्यासों में प्राणतत्व हैं - जिससे विलग हो एक पल भी जीवित रहना उनके लिए

---

१ डॉ. बेचन - स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी साहित्य - पृ.सं. १७५

२ डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी - हिन्दी साहित्य: उद्भव एवं विकास - पृ.सं. २५०

सँभव नहीं। उनके समस्त उपन्यासों का उद्देश्य केवल हिन्दुस्तान की सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, पारिवारिक आदि समस्याओं को अपने उपन्यासों में प्रस्तुत करना है।' [1] इससे स्पष्ट होता है कि प्रेमचंद के उपन्यासों में भारतीय जन-जीवन की बहुमुखी समस्याएँ चित्रित हुई हैं। 'सेवासदन' प्रेमचंद का प्रथम प्रौढ उपन्यास हैं। जिसमें मध्यवर्ग का विडम्बनामय चित्रण है। साथ ही वेश्या समस्या का, अनमेल विवाह का और मध्यवर्ग की नारी जीवन से सम्बन्धित समस्याओं का चित्रण हुआ है। 'प्रेमाश्रम' में ग्रामीण जीवन की समस्याओं का सजीव अंकन किया गया है। किसान-समस्या, मजदूर शोषण की समस्या तथा शासक वर्ग के बढते अत्याचार का सजीव चित्रण भी देखने मिलता है। 'रंगभूमि' प्रेमचंद का सबसे बडा उपन्यास है। इसमें शासक वर्ग के अत्याचार की प्रमुख समस्या है। साथ ही औद्योगिक बनाम कृषी-सभ्यता का भी सफल चित्रण हुआ है। 'कायाकल्प' में देशी नरेशों और रियासतों की प्रधान समस्या को उठाया है। 'निर्मला' में नारी जीवन से सम्बन्धित समस्या का यथार्थ चित्रण हुआ है। इसकी प्रमुख समस्या अनमेल विवाह तथा दहेज प्रथा की है। 'प्रतिज्ञा' में विधवा विवाह की समस्या चित्रित हुई है। 'गबन' में नारी की आभूषण प्रियता से निर्मित समस्या के साथ ही पुलिस और न्याय-व्यवस्था की कटु आलोचना की गई है। 'कर्मभूमि' में लगान बन्दी आन्दोलन, हिन्दु-मुस्लिम एकता की समस्या, नारी चेतना स्पष्ट रुपसे उभर आया है। 'गोदान' कृषक जीवन का महाकाव्य ही माना जाता है। जिसमें किसान मजदूर की करुण गाथा का यथार्थ चित्रण हुआ है। कृषक जीवन की विभिन्न समस्याओं का सजीव अंकन 'गोदान' का प्रमुख उद्देश्य हैं। साथ ही तत्कालीन शोषण के विभिन्न रुप तथा उनकी विशेषताएँ उभरकर आयी हैं। 'गोदान' हिन्दी साहित्य का श्रेष्ठतम् उपन्यास है। प्रेमचंद यहाँ तक पहुँचते पहुँचते गाँधीवाद से आदर्शोन्मुख

---

१ डॉ. महेन्द्र भटनागर - समस्यामूलक उपन्यासकार प्रेमचंद - पृ.सं.१२

यथार्थवाद से एकदम यथार्थवादी बन गये। यह उनका यथार्थवादी उपन्यास है। प्रेमचंद के उपन्यासों में सामाजिक समस्याओं के सफल चित्रण के साथ ही राजनीतिक समस्याओं का भी यथार्थ चित्रण हुआ है।

` प्रेमचंद युग में सबसे अधिक उपन्यास नारी जीवन की समस्या को आधार बनाकर लिखे गए। सदियों से पुरुष की दासता में पददलित नारी आज प्राय: स्वतंत्र हो गयी है। मात्र तत्कालीन भारतीय समाज में सबसे अधिक पीड़ित प्रताड़ित और बंधन ग्रस्त नारी ही थी। विधवा विवाह निषेध के कारण उसके सामने आत्महत्या या वेश्यावृत्ति के अतिरिक्त दुसरा मार्ग नहीं था। विधवा - समस्या को लेकर प्रेमचंद युग में अनेक उपन्यास लिखे गये। प्रेमचंद के ` प्रतिज्ञा ` के साथ ही आ. चतुरसेनशास्त्री के ` अमर अभिलाषा ` तेजारानी दीक्षित के - ` हृदय का काँटा ` आदि उपन्यासों में विधवा के मनोवेदना का करुण हृदयग्राही चित्र अंकित किये गये हैं। जैनेन्द्र के ` परख ` जयशंकर प्रसाद के ` कंकाल `, भगवतीप्रसाद वाजपेयी के ` पतिता की साधना ` आदि उपन्यास भी विधवा - समस्या को लेकर उपस्थित होते हैं।

विधवा के समान वेश्या समस्या को लेकर लिखे गये उपन्यासों में विश्वंभरनाथ शर्मा ` कौशिक ` की ` माँ `, ऋषभचरण जैन का ` वेश्यापुत्र ` बेचनशर्मा ` उग्र ` का ` शराबी ` आदि उपन्यास भी उल्लेखनिय है। साथ ही अनमेल विवाह तथा नारी वर्गपर अनगनित अन्याय, अत्याचार आदि को लेकर अनेक उपन्यास लिखे गये। पारिवारिक समस्याओं में सम्मिलित कुटुंब व्यवस्था के टूटने को आधार बनाकर लिखे गये उपन्यासों में - कौशिकजी की ` माँ `, ऋषभचरण जैन कृत ` भाई `, सियारामशरण गुप्त का ` गोद ` आदि उपन्यास महत्वपूर्ण है। स्वच्छन्द प्रेम, परम्परागत धार्मिक नैतिक एवं सामाजिक रुढ़ियों का चित्रण भी समस्या रुप धारणकर उपन्यासों में प्रस्तुत हुआ। वृन्दावनलाल वर्मा के अधिकांश उपन्यासों में इन समस्याओंका चित्रण हुआ है। उग्र का

` चंद हसीनों के खतूत ` , निराला की ` निरुपमा ` , ` कौशिक की ` भिखारिणी ` आदि उपन्यास भी इस दृष्टिसे महत्वपूर्ण हैं ।

इसके अतिरिक्त जमींदारों ,साहूकारों-महाजनों एवं सरकारी अफसरों के शोषण नीति के शिकार किसानों की समस्याओंका चित्रण भी सफलता से हुआ है । साथ ही उद्योगपतियों के नीति के विभिन्न रुप,पुलिस की धांधली एवं अमानुषिकता का चित्रण प्रेमचंद के उपन्यासों की तरह, प्रसाद की ` तितली `, निराला कृत ` अलका `, शिवपूजन सहाय के ` देहाती दुनिया ` , ऋषभचरण जैन के ` सत्याग्रह ` आदि उपन्यासों में विशेष रुपसे चित्रित है । वृन्दावनलाल वर्मा के ` प्रेम की भेंट ` और ` कुण्डलीचक्र ` में समाज की अन्य अनेक कुरीतियों तथा विकृतियों का सजीव चित्रण हुआ है ।

प्रेमचंद के समकालीन उपन्यासकारों में जयशंकर प्रसाद,वृन्दावनलाल वर्मा, जैनेन्द्रकुमार ,इलाचंद्र जोशी, निराला आदि के नाम विशेष उल्लेखनिय हैं । प्रसाद जी ने केवल तीन उपन्यास लिखे - कंकाल,तितली और इरावती । ` कंकाल ` में धार्मिक शोषण की समस्या को उठाया और स्त्री-पुरुष प्रेम की समस्या का उद्घाटन भी किया । तो ` तितली ` में ग्राम समस्या के साथ ही कौटुंबिक समस्या को उठाया है । प्रसादजी ने प्रेमचंद की तरह आदर्शवादी दृष्टिकोण से ही समस्याओंका समाधान चाहा है । वृन्दावनलाल वर्मा प्रेमचंद युग के ही कलाकार हैं । परंतु उनकी गणना ऐतिहासिक उपन्यासकारों में की जाती हैं । उनके प्रसिद्ध उपन्यास ` मृगनयनी ` में जाँत पाँत के साथ ही आन्तर्जातीय विवाह की समस्या को प्रस्तुत किया हैं । ` गढ कुण्डार ` व ` विराट की पद्मिनी ` में उंच नीच भेद भाव की समस्या को उठाया है । ` प्रेम की भेंट ` उनका प्रेम-प्रधान सफल उपन्यास हैं । ` लगन ` में दहेज समस्या का चित्रण हुआ है । वृन्दावनलाल वर्माजीने अपने उपन्यासों में पारिवारिक समस्याओं,जाति प्रथा से उत्पन्न होनेवाला भेदभाव तथा प्रेम विवाह की समस्याओंका चित्रण किया है ।

जैनेन्द्रकुमार समस्या उपन्यासकारों में अपना विशेष महत्व रखते हैं । वे व्यक्ति केंद्रित समस्यामूलक उपन्यासकार हैं । उनके ` परख ` , ` सुनिता `,

' त्यागपत्र ', ' कल्याणी ' और ' सुखदा ' आदि उपन्यासों में एक साधारण से व्यक्ति के जीवन में उठनेवाली सभी घटनाओं को अपना विषय बनाया है। विशेषकर उनके उपन्यासों में ' नारी के प्रेम की समस्या ' का ही चित्रण मिलता है। और इससे उत्पन्न ' घर बाहर की समस्या ' जैनेन्द्र के उपन्यासों की प्रमुख समस्या है। जैनेन्द्र अपने उपन्यासों में नर-नारी के व्यक्तिगत समस्याओं और उसमें भी नारी प्रेम की समस्या के चित्रण में ही उलझे हुए दिखाई देते हैं। प्रेमचंद युग के उपन्यास लेखकों में इलाचंद्र जोशी का नाम भी विशेष महत्त्वपूर्ण है। उन्होंने अपने उपन्यासों में मानव की प्रेमभावना को तथा समाज का प्रभाव मानव मन में उत्पन्न हीनता की ग्रंथी एवं कुण्ठाओं का चित्रण किया है। यही प्रेम और कुण्ठाएँ उनके उपन्यासों में समस्या बनकर प्रस्तुत हुई हैं। ' प्रेत और छाया ', ' निर्वासित ', ' पर्दे की रानी ', ' जिप्सी ' आदि उपन्यासों में इनका सफल चित्रण हुआ है। जोशीजी के ' जहाज का पंछी ' में शिक्षित वर्ग में बढती हुई बेकारी की समस्या का चित्रण है। निरालाजीने अपने उपन्यासों में व्यंग्य का सहारा लेकर सामाजिक प्रतिष्ठा, कर्मकाण्डों, रुढियों से निर्मित समस्याओंका सजीव चित्रण किया है। ' निरुपमा ', ' बिल्लेसुर बकरिहा ', ' अप्सरा ', ' अलका ' तथा ' कुल्लीभाट ' आदि इनके उपन्यास हैं।

इनके अतिरिक्त ' विश्वंभरनाथ शर्मा ' कौशिक ' और सुदर्शन, प्रेमचंद की परम्परा के अनुयायी है। इनके ' माँ ' और ' भिखारिणी ' सामाजिक उपन्यास है। '[१] इनके साथही भगवतीप्रसाद वाजपेयी, बेचनशर्मा ' उग्र ', आ. चतुरसेनशास्त्री, श्रीवास्तव, ऋषभचरण जैन तथा शिवपूजन सहाय आदि लेखकोंका सक्रिय योगदान रहा है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि प्रेमचंद युग के उपन्यासों में सामाजिक यथार्थ की अभिव्यक्ति हुई है और समाज जीवन की विभिन्न सामाजिक रुढियाँ एवं

---

१ डॉ. शिवकुमार शर्मा - हिन्दी साहित्य -- युग और प्रवृत्तियाँ - - पृ. सं. ६२१

विषमताओं, आर्थिक विषमताओं तथा आर्थिक नैतिक बाहाडम्बरों आदि कारणों से निर्मित सामाजिक समस्याओं का ही चित्रण हुआ है। नारी समस्या को समाज के व्यापक धरातलपर देखा और आगे मनोवैज्ञानिक दृष्टिसे उनका विश्लेषण भी किया है। नारी के अन्तर्मन के संदर्भ ने इन्हें और भी जटिल बना दिया। इनमें यौन पक्ष प्रधान हो गया। जैनेन्द्र, इलाचंद्र जोशी, अज्ञेय, उपेन्द्रनाथ अश्क, नरेश मेहता, मोहन राकेश आदि के 'सुनिता', 'प्रेम और छाया', 'नदी के दीप', 'गिरती दीवारें', 'डूबते मस्तूल', तथा 'अन्धेरे बन्द कमरे' उपन्यासों में समस्याएँ सेक्स से जुडकर आयी हैं।

प्रेमचंदोत्तर युग --

हिन्दी उपन्यासों के ऐतिहासिक विकासक्रम में सन १९३८ से १९५० तक के काल को प्रेमचंदोत्तर काल कहा जाता है। उसके बाद स्वातंत्र्योत्तर युग का आरंभ होता है। इस युग के उपन्यास साहित्य में विचारों की गहराई का समावेश हो गया। मनोवैज्ञानिक, मनोविश्लेषणात्मक, घोर नग्न यथार्थवाद अवचेतनवाद, प्रतीकवाद की प्रवृत्तियों को लेकर उपन्यास क्षीप्र गति से विकास की ओर अग्रेसर हुआ। हालाँकि प्रेमचंद युग में ही नवीन प्रवृत्तियाँ अंकुरित होने लगी थी। जैनेन्द्र के 'परख' और 'सुनिता' तथा भगवतीचरण वर्मा के 'चित्रलेखा' उपन्यासों में नवीन दिशा का संकेत मिलता है। प्रेमचंद युग के बाद हिन्दी उपन्यास क्षेत्र में बहुपक्षिय प्रयोग हुये और हिन्दी का उपन्यास साहित्य अधिक समृध्द हुआ। 'चित्रलेखा', 'सुनिता', 'शेखर : एक जीवनी', 'संन्यासी', 'देशद्रोही', 'बाणभट्ट की आत्मकथा', 'गिरती दीवारें', 'बलचनमा' तथा 'परती परिकथा' आदि हिन्दी उपन्यास की विकास यात्रा की मूल्यवान उपलब्धियाँ है।'[१] इसके साथ ही अनेक प्रतिभा संपन्न नव-उपन्यासकार अपने नवीनतम कृतियों को लेकर हिन्दी उपन्यास जगत् में अवतरित हुए।

---

१ शिवनारायण श्रीवास्तव : हिन्दी उपन्यास - पृ.सं.२७२

साथ ही साथ प्रेमचंद युग के अनेक उपन्यासकार अपने नवीन कृतियों को लेकर उपस्थित हुये। जिनमें वृन्दावनलाल वर्मा, बेचनशर्मा 'उग्र' चतुर सेन शास्त्री, भगवतीचरण वर्मा, जैनेन्द्र, भगवतीप्रसाद बाजपेयी, प्रतापनारायण, श्रीवास्तव, राधिका रमण, गोविंद वल्लभ पंत आदि के नाम प्रमुख है। 'जैनेन्द्र तथा भगवतीचरण वर्मा एक प्रकार से नये युग के संदेशवाहक बनकर आये थे।'[1] विवेच्य युग में प्रेमचंद परवर्ती उपन्यासकारों में प्रथम नाम इलाचंद्र जोशी का आता है। तत्पश्चात प्रमुख उपन्यासकारों में 'अज्ञेय', यशपाल, उपेन्द्रनाथ अश्क, हजारीप्रसाद द्विवेदी, रांगेय राघव, अमृतलाल नागर, नागार्जुन, प्रभाकर माचवे, उदयशंकर भट्ट, राहुल सांकृत्यायन, अमृतराय, उषादेवी मित्रा, अंचल, लक्ष्मी - - नारायण लाल, नरेश मेहता, राजेन्द्र यादव, धर्मवीर भारती तथा फणिश्वरनाथ रेणु आदि के नाम आते हैं। इन उपन्यासकारोंने विशेषत: सन १९४७ के बाद देश, समाज, व्यक्ति मन में उठी नई समस्याओं को अपने उपन्यासों में उठाया है। विवेच्य युग के उपन्यासों को एक सुनिश्चित प्रवृत्ति के अन्तर्गत रखकर अध्ययन करना कठिन कार्य है।

प्रेमचंदोत्तर युग भारतवर्ष में ही नहीं विश्व की दृष्टिसे भी महत्वपूर्ण रहा है। महायुध्दोपरान्त अनेक समस्याएँ उठ खडी हुई। जिन का प्रभाव सबसे अधिक उपन्यास साहित्य पर पडा। भारतवर्ष में 'भारत छोडो' आन्दोलन तथा शासनव्दारा उसका दमन, अभूतपूर्व मँहगाई, सन १९४७ में देश का विभाजन, हिन्दु मुस्लिम दंगों से जन्मी सांप्रदायिक आग, शरणागती समस्या, जमींदारी उन्मूलन, नये राजनीतिक दल, ग्रामसुधार, पंचवार्षिक योजनाएँ, ग्राम पंचायत राज्य आदि के कारण राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक क्षेत्र में बहुविध परिवर्तन आया। फलस्वरुप अनेक समस्याएँ उठ खडी हुई। इसके साथ ही शिक्षा के प्रचार एवं प्रसार से अनेक क्षेत्र खुल गये। औद्योगिक प्रगति के कारण पूँजीपति तथा मजदूरों

---

१ शिवनारायण श्रीवास्तव - हिन्दी उपन्यास - पृ.सं.२७३

के सामने अनेक प्रश्न खड़े हुये, समस्याएँ बढ़ गयी । इन सबका यथार्थ चित्र इस युग के अनेक उपन्यासों में मिलता है ।

प्रेमचंदयुगीन आदर्श, सामाजिक मर्यादा, आस्था एवं विश्वास टूट गया और सामाजिक विधि निषेधों के विषमता के प्रति विद्रोह का स्वर उभर आया । ` गोदान ` का ` होरी ` स्वयं टूट जाता है, मजदूर बनने पर विवश हो जाता है, परंतु कहीं किसी के प्रति विद्रोह का स्वर तक नहीं निकलता है उल्टे पंच परमेश्वर मानकर, यह सब ईश्वर इच्छा ही मानकर, चुपचाप सहता हुआ अंततोगत्वा मृत्यु को प्राप्त करता है । ` निर्मला ` की निर्मला भी एक वृद्ध से विवाह कर अन्दर ही अन्दर घुटती रहती है । मात्र प्रेमचंदोत्तर युग में व्यक्ति प्रधान और समाज व्यवस्था, गौण हो गया था । क्योंकि जैसे ही बौद्धिकता बढ़ती गई, वैसे ही भावुकता की जगह बुध्दि ने लिया । परिणाम स्वरुप सामाजिक विधि-निषेधों के बंधन अस्वीकार किये जाने लगे । वर्माजी के ` तीन वर्ष ` की ` प्रभा ` विवाह को ` स्त्री-पुरुष के बीच में आर्थिक सम्बन्ध ` के रुपमें मानती है । तो ` आखिरी दाँव ` की चमेली पति के अन्याय, अत्याचार से भाग निकलती है और परिस्थितियों के प्रवाह में अनेक पुरुषों से सम्बन्ध स्थापित करती है । ` नदी के व्दीप ` के भुवन और रेखा इसी प्रवृत्ति को अपनाते है । यशपाल के ` देशद्रोही `, ` मनुष्य के रुप `, ` दिव्या `, अश्क की ` गिरती दीवारें `, ` गर्मराख `, जोशी का ` जहाज का पंछी ` आदि उपन्यास तथा अन्य अनेक उपन्यासों में विद्रोहात्मक स्वर मिलता है । तथा उनसे निर्मित अनेक समस्याओंका चित्रण भी ।

आज के उपन्यासकार मनुष्य के आचरण को गौण मानकर, उन आचरणों की प्रेरक प्रवृत्तियों, परिस्थितियों, मनोग्रंथियों को ही प्रमुख मानते हैं । जिसके कारण हिन्दी उपन्यास में मनोवैज्ञानिक तथा मनोविश्लेषणात्मक प्रणाली को अपनाकर उपन्यास लिखे जाने लगे । फ्रायड, एडलर, युंग के विचारधाराओंका प्रभाव लेकर उपन्यासकार मानव मन के अचेतन - अवचेतन को अन्तर्भूमियों का विश्लेषण करने लगा । हमारी दमित वासनाओंका मनोविश्लेषण प्रणाली के व्दारा विश्लेषण करने लगा । इस क्षेत्र में इलाचंद्र जोशी, जैनेन्द्र, अज्ञेय, अश्क आगे है । यशपाल ने

फ्रायड और मार्क्स दोनों से प्रभावित होकर अपने कृतियों में आर्थिक तथा यौन कुण्ठाओं की विकृतियों का सफल चित्रण किया है। इस युग के उपन्यासों में पूँजीपतियों के अवैध प्रेम, एवं यौन तृप्ति से निर्मित समस्याओं का चित्रण मिलता है। भगवतीचरण वर्मा के `आखिरी दाँव`, तथा यशपाल के `दादा कामरेड`, `देशद्रोही`, `दिव्या` आदि तथा अन्य अनेक उपन्यासों में आर्थिक परिस्थितियों से विवश नारी के शरीर विक्रय तथा उससे निर्मित समस्याओं का मार्मिक चित्रण मिलता है। उपेन्द्रनाथ अश्क के उपन्यासों में भी काम-कुंठाओं के चित्र भरे पड़े हैं। प्राय: इन उपन्यासों में प्रमुखत: विवाह और यौन-आकर्षण की समस्याओं का ही चित्रण मिलता है।

इसी युग में समाज जैसा है, वैसा ही उसका चित्रण करने की प्रवृत्ति मिलती है जो कि प्रेमचंद के 'गोदान' से आरंभ हुई थी। इस परम्परा में सामाजिक यथार्थ का बड़ा ही सहज एवं स्वाभाविक चित्रण उपन्यासों में चित्रित होने लगा। इस परम्परा में वृन्दावनलाल वर्मा, भगवतीचरण वर्मा, भगवतीप्रसाद वाजपेयी, आदि प्रेमचंद युग के लेखकों का यही दृष्टिकोण रहा। और उसे पुन: स्थापित कर आगे बढ़नेवाले लेखकों में - नागार्जुन, अमृतलाल नागर, उदयशंकर भट्ट, अंचल, फणिश्वरनाथ रेणु, शेवडे, विष्णु प्रभाकर, लक्ष्मीनारायण लाल आदि के नाम उल्लेखनिय है। दुसरे वर्ग के जिन्होंने मार्क्सवादी विचारधाराओं से प्रभावित होकर अपने उपन्यासों में आर्थिक विषमता से पीड़ित सर्वहारा वर्ग की दयनीय स्थिति का मार्मिक चित्रण कर, शोषक वर्ग पर प्रहार किया। इनमें यशपाल, रांगेय राघव, अमृतराय, भैरवप्रसाद गुप्त, आदि के नाम उल्लेखनिय है।

सामाजिक यथार्थ की एक तिसरी परम्परा ``आँचलिक उपन्यास` के रुपमें उभर आयी। आजकल आँचलिक उपन्यासों की धारा विशेष बल पकड़ रही है। नगर और ग्रामीण ``आँचल` से सम्बन्धित अनेकों समस्याएँ उनमें चित्रित हो रही है। मात्र इनकी एक कमजोरी रही है। स्थानिय बोलियों के अनेकों शब्द उपन्यासों के आकलन में बाधक सिध्द हुये हैं। तो भी इनका हिन्दी के समस्या उपन्यासों में महत्वपूर्ण स्थान है। इस प्रकार के समस्या उपन्यासकारों में,

फणीश्वरनाथ रेणु, शिवप्रसाद मिश्र के नाम विशेष उल्लेखनीय है। इसी परम्परा में नागार्जुन,उदयशंकर भट्ट ,रांगेय राघव,, देवेन्द्र सत्यार्थी, शैलेश मटियानी, राजेन्द्र अवस्थी आदि का योगदान भी महत्वपूर्ण है।

प्रेमचंदोत्तर हिन्दी के समस्याप्रधान उपन्यासों में जिनका विशेष महत्वपूर्ण योगदान रहा है, उन उपन्यासकारों तथा उपन्यासोंका संक्षिप्त विवरण देना आवश्यक है। प्रेमचंद परवर्ती उपन्यासकारों में इलाचंद्र जोशी का नाम सर्वप्रथम आता है। प्रेमचंद युग के अन्तर्गत इनकी कुछ कृतियों का उल्लेख हो चुका है। अन्य उपन्यासों में संन्यासी`,` सुबह के भूले`` मुक्तिपथ` ,आदि उपन्यास महत्वपूर्ण है। व्यक्तिवादी उपन्यास के रुपमें अज्ञेय` के ` शेखर : एक जीवनी`, का असाधारण महत्त्व है। इस उपन्यास में प्रेम,यौन अतृप्ति और विवाह प्रमुख समस्याएँ है। मात्र अज्ञेय ने इनका निरुपण व्यक्ति की व्यक्तिगतता के रुपमें ही चित्रित किया है। यशपाल प्रगतिशील लेखकों में सबसे ऊँचा स्थान रखते हैं। उनके महत्वपूर्ण समस्या उपन्यासों में -` देशद्रोही`,` दादा कॉमरेड`, ` दिव्या`,` अमिता`,` झूठा सच`, मनुष्य के रुप` आदि प्रमुख है।` दिव्या` में नारी - महत्त्व की समस्या है।` अमिता` में दास-प्रथा के साथ सामाजिक वर्ग विषमता की समस्या का भी सजीव चित्रण हुआ है। ` झूठा - सच` देश विभाजन से निर्मित स्थितियों का लेखा-जोखा है। इसमें सामाजिक,राजनीतिक, आर्थिक विविध समस्याओंका चित्रण है।` मनुष्य के रुप` में मनुष्य की विषम आर्थिक समस्या के साथही नारी समस्या का सफल चित्रण मिलता है। उपेन्द्रनाथ अश्क समस्याप्रधान उपन्यासोंमें अपना विशिष्ठ स्थान रखते हैं। इन्होंने अपने उपन्यासोंमें निम्न-मध्यवर्ग की समस्याओंको उठाया है। ``गिरती - दीवारें` उनकी सर्वोत्कृष्ट कृति है।` 'गिरती - दीवारें ` में निम्न-मध्यवर्ग के युवक के जीवन व्यापी संघर्ष और समस्याओंका सजीव अंकन है। मध्यमवर्गीय परिवार, समाज एवं व्यक्ति के जीवन की समस्याओंका सजीव चित्रण उनके उपन्यासों में सर्वत्र दिखाई देता है। साथ ही यौन कुण्ठाओंका चित्रण भी मिलता है। उनके

प्रमुख उपन्यास हैं - 'गर्म राख' बड़ी बड़ी आँखें, पत्थर अल पत्थर, शहर में घूमता आयना' आदि। उदयशंकर भट्ट के उपन्यासों में नारी स्वैर की समस्या प्रमुख है। 'डॉ. शैफाली' 'शेष - अशेष', 'सागर, लहरें और मनुष्य' तथा 'लोक-परलोक' इनकी श्रेष्ठ कृतियाँ हैं। रांगेय राघव ने साम्यवादी चेतना का प्रभाव लेकर अनेक उपन्यास लिखे हैं। जिनमें बहुविध समस्याओं का चित्रण मिलता है। शोषित वर्ग की समस्या के साथ प्रताड़ित नारी का चित्रण भी मिलता है। 'हुजूर' उनका बड़ा ही गठा हुआ उपन्यास है। इसमें भारतीय समाज के परिवर्तन की अच्छाइयाँ और बुराइयों का चित्रण किया है। 'सीधा-सादा रास्ता', 'विषाद मठ,' घरौंदे', 'प्रोफेसर' आदि इनकी सामाजिक कृतियाँ हैं। 'कबतक पुकारूँ' तथा 'छोटी सी बात' उनके महत्वपूर्ण उपन्यास हैं।

इसी युग में प्रेमचंद की परम्परा को पुन: स्थापित करनेवाले उपन्यासकारों मे - नागार्जुन तथा अमृतलाल नागर का विशेष महत्व है। अमृतलालनागर ने सामाजिक और व्यक्तिगत दोनों प्रकार की समस्याओं को उठाया हैं। 'बूँद और समुद्र' उनका श्रेष्ठ उपन्यास है। इसमें जीवन की मुलभूत समस्याओं को उठाया है। समाज में व्यक्ति का महत्व स्वीकारते हुए, आधुनिक सामाजिकता, आर्थिकता तथा राजनीतिक शक्तियों और विचारधाराओं के फलस्वरुप निर्मित अनेक समस्याओं का सजीव चित्रण किया है। 'सुहाग के नुपुर' भी उनका उल्लेखनीय उपन्यास है। नागार्जुन तो प्रेमचंदोत्तर समस्यामूलक उपन्यासकारों में प्रेमचंद परम्परा के ही उपन्यासकार है। नागार्जुन का महत्व स्वीकार करते हुए डॉ. विमल भास्कर लिखते है ' "प्रेमचंद के युग की समस्याएँ नागार्जुन के काल में भी उतनी ही ज्वलंत रही है - इसमें संदेह नहीं, किन्तु प्रेमचंद में जहाँ उसके निदान के लिए एक छटपटाहट दिखाई पडती है, प्रेमचंदोत्तर उपन्यासकारों में उन समस्याओं के निदान के लिए सशक्त स्वर में आवाज बुलन्द करने का प्रयत्न किया गया है। नागार्जुन इस पथ में प्रेमचंदोत्तर उपन्यासकारों के बीच सर्वाधिक महत्वपूर्ण कड़ी के रुप में आये है।"[१] 'बलचनमा' नागार्जुन का ही नहीं हिन्दी का श्रेष्ठ उपन्यास है।

१ हिन्दी में समस्या-साहित्य - पृ.सं.२११

इसकी प्रमुख समस्या है – खेत – मजदूर की। ग्रामीण अंचल विशेष की आज की ज्वलंत समस्याओंको उठाया है। जमींदारों और किसानों के बीच चलते हुए संघर्ष का चित्रण किया है। उनके अन्य उपन्यासोंमें 'रतिनाथ की चाची', 'बाबा बटेसरनाथ', 'दु:खमोचन', 'नई पौध' आदि प्रमुख हैं। 'रतिनाथ की चाची' में ऊँच-नीच, जाँत-पाँत, का भेदभाव, अनमेल विवाह, छुआछूत, ग्रामीण विधवा की कष्ट भरी तथा दु:खभरी स्थिति आदि समस्याओंको उठाया है। 'नई पौध' की प्रमुख समस्या आर्थिक है। धन लालच में लड़की को पशु के समान बेचने की तथा पारिवारिक कुरीतियों का सफल चित्रण किया है। 'वरुण के बेटे' में मछुआ जीवन की समस्या का चित्रण है। वास्तव में नागार्जुन ग्रामीण उपन्यासकार हैं।

फणिश्वरनाथ रेणु एक सफल समस्याप्रधान उपन्यासकार है। 'मैला आँचल' तथा 'परती परिकथा' इनके सफल समस्याप्रधान उपन्यास है। 'मैला आँचल' में मेरीगंज ग्राम का आँचल प्रातिनिधिक है। भारत के किसी भी ग्राम में थोडे बहुत परिवर्तन में यह चित्र देखने मिलता है। इसमें राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक तथा भौगोलिक सभी प्रकार की समस्याओंका सफलतापूर्वक चित्रण किया है 'गाँव की आपसी झगडे, डाग-डाँट, बहुबेटी की छेड छाड, चुगली चबाई, औरतों की सरगफाड बातें, मठोंपर बाह्य दिखावे में छिपा हुआ भोग विलास बूढों का विवाह करते जाना।' [१] आदि अनेक समस्याओंका चित्रण हुआ है। आर्थिक समस्याओंके साथ ही पूँजीवादी समस्याओंका भी सुंदर ढंगसे चित्रण किया है। भाई भतिजेवाद की समस्या भी चित्रित है। 'परती परिकथा' में जाँत-पाँत ऊँच-नीच, विविध दलों की स्वार्थसिध्दता, भूमिहीनोंकी समस्या, नारी समस्या, कृषि की समस्या, सब चित्रित है। "उनकी विविध समस्याओं और समाधानों को देखते हुए उन्हें प्रेमचंद का दुसरा रुप माना जाता है। सन ३८ के बाद भारत

---

१ चौहान – आधुनिक हिन्दी साहित्य – पृ.सं.२२३

की विस्तृत समस्यायें इनके आँचलिक उपन्यासों में देखने को मिलती हैं। [१]

प्रेमचंदोत्तर अन्य समस्या उपन्यासकारों में विष्णुप्रभाकर, उषा देवी मित्रा, प्रभाकर माचवे, डॉ.देवराज, लक्ष्मीनारायण लाल, उषा प्रियंवदा, राजेन्द्र यादव आदि के नाम भी विशेष उल्लेखनिय हैं। विष्णुप्रभाकर ने `तट के बंधन` में आधुनिक नारी की समस्या, विशेषकर दहेज समस्या को उठाया है। `स्वप्नमयी` में पारिवारिक समस्या का मार्मिक चित्रण है। प्रथम महिला उपन्यास लेखिका के रुपमें उषादेवी मित्रा का नाम लिया जाता है। इनकी `पिया` और `जीवन की मुस्कान` समस्या उपन्यास है। जिसमें नारी के वैवाहिक जीवन और प्रेम की समस्या का चित्रण प्रमुख है। प्रभाकर माचवे, मध्यवर्ग की समस्याओंका मार्मिक ढंग से चित्रण करने में सिध्दहस्त है। उनके प्रमुख उपन्यास है --`द्वाभा`, `परंतु`, `साँचा` आदि। डॉ.देवराज ने भी `बाहरभीतर` में अनमेल विवाह की समस्या को उठाया है, तो `पथ की खोज` में कौटुंबिक समस्या के साथ ही प्रकाशन संस्थाओंद्वारा लेखकों के शोषण आदि का चित्रण किया है। लक्ष्मीनारायण लाल ने अपने उपन्यासोंमें जाँत पाँत के भेदभाव, अंधविश्वासों, खेतों-खलिहानों आदि समस्याओं को उठाया है। इनके समस्या प्रधान उपन्यासों में `धरती की आँखें` तथा `बया का घोंसला और साँप`, उल्लेखनिय उपन्यास हैं। उषा प्रियम्वंदा ने भी आज के नारी जीवन की समस्याओं लेकर `पचपन खंभे लाल दीवारे,` `रुकोगी नहीं राधिका`, आदि उपन्यास लिखे हैं। मोहन राकेश के `अन्धेरे बन्द कमरे` में मध्यमवर्गीय शिक्षित नारी की पारिवारिक समस्या का चित्रण है। राजेन्द्र यादव ने मध्यमवर्गीय पारिवारिक समस्याओंका सजीव चित्रण किया है। `प्रेत बोलते हैं` `उखडे हुये लोग`, इनकी उत्कृष्ट कृतियाँ है। इसके अतिरिक्त नौकरी पेशा नारी की समस्याओं को लेकर रजनी पनिकर, मीरा महादेवन आदि लेखिकाओंने उपन्यास लिखे हैं।

---

१ डॉ.विमल भास्कर, - हिन्दी में समस्या साहित्य - पृ.सं.११६

स्वतंत्रता के बाद उपर्युक्त उपन्यासकारों के अतिरिक्त पुरानी पीढ़ी के अनेक लेखकों के साथ नयी पीढ़ी के प्रतिभावान लेखक अपने समस्या - उपन्यासोंको लेकर अवतरित हुये है। जिनमें रामेश्वरशुक्ल ‘ अंचल ’ के उपन्यास उल्लेखनीय है। ‘ उल्का ’ तथा ‘ मरु-प्रदीप ’ नारी समस्या को लेकर लिखे गये है। भैरवप्रसाद गुप्त तथा अमृतराय साम्यवादी चेतना से प्रभावित लेखक है। गुप्तजीने ‘ मशाल ’ में मजदूरों का संघर्ष चित्रित किया है तो ‘ गंगामैया ’ और ‘ सतीमैया का चौरा ’ में ग्रामीण समस्याओंको उठाया है। अमृतराय के ‘ बीज ’ ‘ नागफनी का देश ’, ‘ धुँआ ’ आदि सामाजिक समस्या प्रधान उपन्यास है। मन्मथनाथ गुप्त के ‘ अवन्यात्रा ’ ‘ गृह-युध्द ’ में धार्मिक समस्या का चित्रण मिलता है। शेवडेजी के ‘ मृगजल ’ और ‘ ज्वालामुखी ’ भी उल्लेखनीय उपन्यास है। मनोवैज्ञानिक उपन्यासों में धर्मवीर भारती के ‘ गुनाहों का देवता ’ तथा ‘ सूरज का सातवा घोडा ’ भी महत्वपूर्ण है। इसी परम्परा में नरेश मेहता का ‘ डूबते मस्तूल ’ तथा रघुवंश ‘ तंतुजाल ’ उपन्यास भी विशिष्ट स्थान रखते हैं। शिवप्रसाद ‘ रुद्र ’ की ‘ बहती - गंगा ’ भी महत्त्वपूर्ण कृति है। यज्ञदत्त शर्मा के ‘ इन्सान ’ में सांप्रदायिक समस्या का हृदयविदारक चित्रण मिलता है।

श्रीलाल शुक्ल का ‘ रागदरबारी ’ एक विशिष्ट कृति है। कॉलेज की समस्या से अन्य समस्याओंका बडा ही मार्मिक चित्रण किया है। ‘ रागदरबारी ’ में राजनीतिक समस्या का भी बडा ही सुंदर चित्रण मिलता है। शानी के ‘ कालाजल ’ में मुस्लिम पारिवारिक समस्या का सफल चित्रण मिलता है। इस समस्या को शानी ने उसकी पूरी यातना, विसंगतियों के साथ चित्रित किया है। भीष्म सहानी की ‘ कडियाँ ’ तथा ‘ तमस ’ उल्लेखनीय उपन्यास हैं। ‘ तमस ’ में भारत विभाजन से सम्बन्धित यथार्थ का चित्रण किया है। इन में स्वार्थी राजनीतिज्ञता तथा स्वार्थान्ध नेतागिरी से जन्मी समस्याओंका सफल चित्रण मिलता है। शिवसागर मिश्र का ‘ अक्षत ’ में पारिवारिक समस्या को उठाया है। इनके अतिरिक्त श्यामु संन्यासी (उत्थान), नरेन्द्र कोहली (दिशा),

देवेश ठाकुर (भ्रमभंग), गोपाल उपाध्याय (एक टुकड़ा इतिहास), महिपसिंह (यह भी नहीं), मनोहर श्याम जोशी (कुरु कुरु स्वाहा) तथा निर्मल वर्मा, गिरधर गोपाल, कृष्णचंद भिक्षु आदि उल्लेखनीय उपन्यासकार तथा उपन्यास हैं।

महिला लेखिकाओं में मन्नू भण्डारी ने ' आपका बंटी ' में तलाक शुदा पति-पत्नी के प्रश्न को बच्चे की समस्या के रुपमें उठाया है। अन्य लेखिकाओंमें - शिवानी, शशिप्रभा शास्त्री, मंजुला भगत, मृदुला गर्ग, अंसल के नाम महत्वपूर्ण है।

आज हिन्दी उपन्यास जीवन और जगत् के बहुआयामी पक्षों को रुपायित करने का प्रयास कर रहा है। इस दृष्टिसे ढेर सारे उपन्यास लिखे गए हैं - लिखे जा रहे हैं। इन उपन्यासों की सफलता के संदर्भ में डॉ. दंगल झाल्टे का कथन है "सन साठ के बाद तो उपन्यास ढेरों लिखे गए लेकिन उपलब्धियों के शिखरों तक वे ही पहुँच सके जो सामाजिक जीवन की अनुभूतिओंके प्रति पूर्णत: समर्पित रहे।" [१] इसी युग के समस्याप्रधान उपन्यासों के बारे में उनका यह कथन भी विशेष उल्लेखनिय है - "भारतीय जीवन के महानगर, नगर, कस्बों तथा गांव की जिंदगी की विविध समस्याएँ तथा उन के रुप इन उपन्यासों में यथार्थ धरातल पर चित्रित किए जा रहे हैं। इस पीढी में राही मासूम रजा का ' आधा गांव ', श्रीलाल शुक्ल का ' रागदरबारी ', मन्नू भण्डारी का ' आपका बंटी ', कमलेश्वर का ' समुद्र में खोया हुआ आदमी ' जैनेन्द्रकुमार का ' दशार्क ', बदी उज्जमॉ का ' एक चूहे की मौत ', शिवप्रसाद सिंह का ' अलग अलग वैतरणी ' मणिमधुकर का ' सफेद मेमने ', राजकमल चौधरी का ' मछली मरी हुई ', रामदरश मिश्र का ' जल टूटता हुआ ', जगदंबाप्रसाद का ' मुरदाघर ', शरद देवडा का ' कॉलेज स्ट्रीट के नये मसीहा ', गोविंद मिश्र का

---

१ संपादन - हिन्दी विभाग, पुणे विद्यापीठ - साठोत्तर हिन्दी साहित्य का परिप्रेक्ष्य - पृ.सं.५७

'लाल-पीली जमीन', ममता कालिया का 'बेघर', शानी का 'सफेद घोड़ा-काला सवार' अज्ञेय का 'अपने अपने अजनबी', ज्योत्स्ना मिलन का 'अपने साथ' तथा जगदीशचंद्र का 'कभी न छोड़े खेत' आदि उपन्यास उल्लेखनीय हैं। इस पीढ़ी के उपन्यासकारों ने समाज के विभिन्न वर्गों की अनेकविध समस्याओं के साथ ही भ्रष्ट एवं आलसी नौकरशाही, दिन-प्रतिदिन महंगी न्याय व्यवस्था, फिल्म जगत की विभीषिकाएँ, आपातकाल का उत्पीड़न, पुलिस की अंधाधुंधता आदि देश तथा समाज को घेरे विभिन्न प्रश्नों को उपन्यासों की विषयवस्तु के रूप में उजागर किया है।'[१]

इसप्रकार हम देखते हैं कि हिन्दी उपन्यास अपूर्व प्रगति की ओर अग्रेसर है। पुरानी पीढ़ी के अनेक उपन्यासकार आज भी सक्रिय योगदान दे रहे हैं और बदली हुई परिस्थितियों के अनुसार जीवन चित्रण का प्रयास कर रहे हैं। इधर नयी पीढ़ी के दर्जनों प्रतिभासंपन्न लेखक अपने युग की समस्याओं से अवगत होकर सजीव एवं सफल चित्रण में कार्यरत हैं। यह सब देखकर ऐसा लगता है कि हिन्दी उपन्यास समृध्द भविष्य की ओर अग्रेसर है - भविष्य के लिए इनमें नई संभवनाएँ मौजुद हैं और हमें यह आशा है कि कुशल कलाकारों के हाथों यथार्थ जीवन की समस्याएँ उपन्यास लेखन का सशक्त माध्यम बन सकती हैं।

भगवतीचरण वर्मा --

भगवतीबाबू समस्या-मुलक उपन्यासकार हैं। सन १९२८ में 'पतन' नामक उनका पहला उपन्यास प्रकाशित हुआ। तदनंतर सन १९८१ तक (जीवन अंततक) लगातार उपन्यास का सृजन करते रहे। पहले पहल वे हिन्दी उपन्यास क्षेत्र में चिंतक के रुपमें अवतरित हुए। परंतु धीरे धीरे विचारों से व्यक्तिवादी होकर भी अपने उपन्यासों में समकालीन युगजीवन की व्यापक समस्याओं का चित्रण करते

---

१ संपादन - हिन्दी विभाग पुणे विद्यापीठ - स्वातंत्र्योत्तरी हिन्दी - साहित्य का परिप्रेक्ष्य - पृ.सं.६०

है। 'टेढ़े मेढ़े रास्ते', 'चित्रलेखा', 'भूले बिसरे चित्र', 'आखिरी दाँव', 'सीधी सच्ची बातें', 'सामर्थ्य और सीमा', 'सबहिं नचावत राम गुसाईं', 'प्रश्न और मरीचिका', वर्माजी के प्रसिध्द समस्याप्रधान उपन्यास है। उनके प्रसिध्द उपन्यास 'चित्रलेखा' की कथा का उत्स 'पाप-पुण्य की समस्या' ही है। पाप-पुण्य की शाश्वत सामाजिक समस्या के साथ ही 'चित्रलेखा' में प्रेम-विवाह की समस्या को भी उठाया है।

भगवतीबाबू ने अपने उपन्यासों में युग की राजनीतिक सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक तथा आर्थिक समस्याओं का चित्रण किया है। 'टेढ़े मेढ़े रास्ते' एक राजनीतिक उपन्यास है। इसमें वर्माजीने रामनाथ तिवारी नामक तालुकेदार तथा उनके पुत्र दयानाथ, उमानाथ और प्रभानाथ आदि पात्रों के माध्यम से विविध राजनीतिक समस्याओं के विभिन्न पहलों का विवेचन प्रस्तुत किया है। साथ ही सामाजिक पृष्ठभूमि में जीवन की जटिलता और शोषण को भी दिखाया है। इसमें स्त्री-पुरुष सम्बन्ध, पारिवारिक तथा नारी-स्वतंत्रता की समस्याओं का भी चित्रण मिलता है। 'तीन वर्ष' में मध्यम वर्गीय आर्थिक समस्या प्रमुख है। साथ ही प्रेम, विवाह तथा वेश्या-समस्या तथा पूँजीवादी सभ्यता की समस्या का चित्रण है। 'आखिरी दाँव' में भी आर्थिक समस्या ही प्रमुख है। आर्थिक विषमता से आयी-सामाजिक विभिषिका, पारिवारिक व्यवस्था की -हासोन्मुखता, फिल्मी जीवन की घुटन तथा उससे सम्बन्धित समस्याओं का चित्रण किया है। 'अपने खिलौने' में आधुनिक जीवन की अनेक विडम्बनापूर्ण स्थितियों को व्यंग्यपूर्ण शैली में दर्शाया है।

'भूले बिसरे चित्र' वर्माजी एक सफल समस्या प्रधान उपन्यास है। इसमें विविध समस्याओं का चित्रण अत्यंत सफलता से किया गया है। पाँच खण्डों में विभाजित यह एक बृहतकाय उपन्यास है। इसके दुसरे खण्ड में धाँधली, रिश्वतखोरी और अन्याय आदि का चित्रण है, तो तिसरे खण्ड में तत्कालीन परिस्थितियों में प्रचलित, सिफारिश, घूसखोरी, कुनबापरस्ती के चित्रण के साथ अछूत समस्या को भी दर्शाया है। 'भूले बिसरे चित्र' में सन १८८५ से १९३० तक की राजनीतिक,

सामाजिक आर्थिक स्थितियाँ, समस्याओं, संघर्षों एवं परिवर्तनों तथा राष्ट्रीय चेतना के व्यापक चित्र खिंचे हैं। साथ ही संयुक्त परिवारों की समस्या का सजीव चित्रण मिलता है। ' वह फिर नहीं आयी ' नारी-जीवन की समस्या का चित्रण करनेवाला लघु उपन्यास है। ' सामर्थ्य और सीमा ' वर्माजी की एक प्रौढ कृति है। इसमें हिन्दु-मुस्लिम समस्या, पूँजीपति समस्या आदि का यथार्थ चित्रण हुआ है। ' थके पाँव ' एक लघु-उपन्यास है। जिसमें मध्यमवर्गीय आर्थिक विषमताओं तथा संघर्ष को दिखाया है। ' रेखा ' वर्माजी का एक मनोवैज्ञानिक उपन्यास है। इसमें आधुनिक जीवन के प्रेम, विवाह और सेक्स की समस्या का चित्रण मिलता है। साथ ही अनमेल विवाह के दुष्परिणामों को दिखाया है।

' सीधी सच्ची बातें ' में सन १९३८ से लेकर १९४८ तक का काल चित्रित है। यह एक राजनीतिक उपन्यास है। इसमें भारतीय समाज और जनमानस की हलचलों का सफल चित्रण किया है। प्रमुखत: पूँजीपति समस्या, सांप्रदायिक समस्या, छुआछूत, व्दितीय महायुध्द कालिन भारत की राजनीतिकता आदि का सजीव अंकन हुआ है। ' सबहिं नचावत राम गुसाईं ' तथा ' प्रश्न और मरीचिका ' में वर्माजी ने आज के सभी समस्याओं का ज्वलंत चित्रण किया है। इसमें हरजगह का भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, भाईभतिजेवाद, बेईमानी, धाँधली आदि का यथार्थ चित्रण किया है। विशेषता राजनीतिक क्षेत्र के स्वार्थी चरित्रों का चित्रण कर उनसे निर्मित समस्याओंका बडा ही सफल एवं सजीव अंकन किया है।

इस प्रकार भगवतीबाबू ने अपने उपन्यासों में मानव-जीवन की समस्त समस्याओंका खुले-आम चित्रण किया है। साथ ही साथ उनका समाधान भी कुछ हदतक प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।